B.M.A College Baheri Darbhanga (L.N.M.U)
BA (Hons) part-1 पेपर-II

Date 14.9.20

Dr Manoj Kumar Sah
Deptt of pol-sci

बालगंगाधर तिलक जी के धर्म पर विचार

तिलक जी के धर्म पर विचार जिस प्रकार महात्मा गाँधी एक राजनीतिज्ञ के रूप में छिपे हुऐ धार्मिक व्यक्ति थे। ठीक उसी प्रकार तिलक जी भी राजनीतिज्ञ के साथ - साथ एक धार्मिक व्यक्ति थे। तिलक जी ने प्राचीन राजनीति को वास्तविक राजनीति नहीं समझते थे।

भारतीय दर्शन में धर्म राज्य की प्रतिस्थापना करना ही उनका लक्ष्य था। दूसरे शब्दों में वे एक ऐसी राजनीतिक व्यवस्था के समर्थक थे जिसका उद्देश्य धर्म की रक्षा तथा पोषण करना हो। वे शिवाजी के हिन्दू स्वराज्य की धारणा से बहुत अधिक प्रभावित थे। शिवाजी उनके प्रेरणा स्त्रोत रहे। भारत में मुगलों के शासन ने हिन्दू स्वराज्य की स्थापना के स्वप्न को नष्ट कर दिया था। परन्तु शिवाजी ने उसे पुनः स्थापित करने का प्रयत्न किया। अंग्रेजी शासन ने तो भारत में हिन्दू राज्य की सम्भावना को ही समाप्त कर दिया था। अतः तिलक जी ने शिवाजी के आदर्शों को अपना कर राजनीति में प्रवेश किया और इस प्रकार उन्होंने शिवाजी के अवतार के रूप में अपना नाम अमर लिया।

(1) तिलक जी का धर्म प्राचीन ग्रंथों का तत्व था
(2) अद्वैतवादी होकर भी द्वैतवादी के समर्थक थे।
(3) हिन्दू धर्म की एकता का माध्यम
(4) तिलक जी मुसलमानों के विरोधी नहीं थे।
(5) तिलक जी हिन्दू परम्परावादी थे।